IJAER/Oct-Nov 2012 /Volume-1/Issue-3/Article No-19/ 296-297 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

वर्तमान शिक्षा एवं प्रौद्योगिक क्रान्ति

डॉ० सुरक्षा बंसल
शोध निर्देशिका
शिक्षा विभाग
सी०एम०जे० विश्वविद्यालय
राय-भोई, जोरवाट, मेघालय।

अर्चना रघुवंशी
शोधार्थी
शिक्षा विभाग
सी०एम०जे० विश्वविद्यालय
राय-भोई, जोरवाट, मेघालय।

भूमण्डलीकरण जैसे ही हम सुनते हैं तो हमारे मस्तिष्क में विश्व तकनीकी के विभिन्न प्रकार के विचार आने लगते हैं। चाहे वह स्पेस, नेटवर्किंक या मोबाइल वर्ल्ड हो साथ ही साथ आई०टी० सेक्टर या मास कम्यूनिकेशन ही क्यों न हो। किन्तु जब हम लोग अर्थव्यवस्था के वैश्वीकरण की बात करते हैं तो यह आधुनिक विश्व आपस में जुड़कर एक बड़ा परिवार का रूप ले लिया है और कोई भी देश इससे अपने आपको पृथक भी नहीं कर सकता, क्योंकि आधुनिक व्यापार और वाणिज्य ने वर्तमान विश्व को एक बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में जोड़कर रखा है। अतः हम कह सकते हैं कि वैश्वीकरण इस विश्व को एक ध्रुवी बनाने का प्रयास है। इसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक है जिसका अर्थ है घरेलू अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ना। अतः यह स्वाभाविक है। वैश्वीकरण से सभी देश अपनी मूल्य-सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा, तकनीक, सूचना-संचार, विज्ञान, अनुसंधान, उत्पादन, विनियोग, विनिर्माण आदि के अवाध प्रक्रिया द्वारा परम्परागत ढंग से जुड़ जायेंगे और सारी दुनिया सिमटकर एक वैश्विक गॉव के रूप में दिखाई पडेगी। जिसमें सबके राष्ट्रीय हित विकसित होंगे।

विश्व के अनेक आधुनिक देशों पर जब सभ्यता की छाप भी नहीं पड़ी थी, उस समय से भारत में सभ्यता और संस्कृति चरमोत्कर्ष पर पहुँच चुकी थी। प्राचीन ग्रन्थों, उपनिषदों, वेदों व अन्य वैदिक टीकाओं में भारतीय मनीषियों की विद्वता का प्रमाण मिलता है। उन्हीं महत्वपूर्ण और गरिमामयी परम्पराओं में इस देश की मूल्य संस्कृति विकसित हुई।

भूमण्डलीकरण आज का बहुचर्चित विषय है। हम इसके प्रभाव से बच नहीं सकते हैं। यह प्रत्येक व्यवस्था को प्रभावित करता है। भूमण्डलीकरण वास्तव में वस्तुओं, सेवाओं और पूँजी के मुक्त आदान-प्रदान का समन्वय है। १९वीं सदी के उत्तरार्द्ध में औपनिवेशिक शोषण के फलस्वरूप औद्योगिक क्रान्ति ने इस प्रवृत्ति को प्रमुखता प्रदान की है। २०वीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय विनिमय प्रक्रिया के निरन्तर आधुनिकीकरण और अन्तर्राष्ट्रीय अनुबन्धों गेट समझौतों के अनुमोदन ने हमारे समाज में भूमण्डलीकरण की गति को तेज कर दिया है। २१वीं सदी में इस प्रवृत्ति में काफी तीव्रता आई है। इस तीव्रता के मुख्य तीन कारण है-

१. पूरे विश्व में आर्थिक स्वतन्त्रता का विस्तार
२. प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में वृद्धि, विशेषकर संचार के क्षेत्र में तीसरा कारण इन विभिन्न आयामों में आपसी निर्भरता।

संचार के क्षेत्र में प्रगति ने भूमण्डलीकरण के परिदृश्य को और अधिक स्पष्ट कर दिया है। संचार की प्रगति तथा सूचना तकनीकी ने आज भी देश को दूसरे के काफी करीब ला दिया है। यही कारण है कि आज ज्ञान व सूचनाओं के प्रसार में भी तेजी दृष्टिगत हो रही है। इस प्रवृत्ति ने शिक्षा को प्रभावित किया है। आज शिक्षा को भी उद्योग की श्रेणी में खड़ा कर दिया गया है और इससे भी हमारी अपेक्षा पूँजी व लाभ पर आधारित हो गयी है। यही कारण है कि आज शिक्षा का उद्देश्य बदल गया है।

प्राचीन काल में शिक्षा और प्रशिक्षण की प्रक्रिया मौखिक संस्कृति पर आधारित थी, इसलिए तत्कालीन शिक्षा प्रक्रिया में रहकर सीखने पर अधिक बल दिया गया था।शिक्षण की विधि में पुनरावृत्ति पर बल दिया जाता था। विद्यार्थियों की संख्या कम थी। शिक्षा के लिए अलग से भवन नहीं थे। धार्मिक स्थलों जैसे- मन्दिरों, गिरिजाघरों आदि में कक्षायें लगती थीं। मध्यकाल में विद्यालय शिक्षा का उद्भव हुआ जिससे शिक्षा के क्षेत्र में पहली क्रान्ति के रूप में विद्यालयी शिक्षा व्यवस्था विकसित हुई।

दूसरी क्रान्ति पुर्नजागरण काल और औद्योगिक क्रान्ति के बीच आई। इस दौरान राष्ट्र-राज्य का विकास हुआ और राजनीतिक केन्द्रीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हुई। शिक्षा व्यवस्था राज्य के अधीन हुई जिससे धीरे-धीरे शिक्षा का धर्म निरपेक्षीकरण और मानवीकरण प्रारम्भ हुआ। इसके साथ-साथ मुद्रण प्रौद्योगिकी के विस्तार करने में समाज में वैज्ञानिक सोच और संस्कृति विकसित करने में मद्द मिली।

शिक्षा में तीसरी क्रान्ति जन शिक्षा अभियान के रूप में हुई। आरम्भ में जन शिक्षा साक्षरता का पर्याय मानी जाती थी। केवल पढ़ना और लिखना ही इसकी धुरी मानी जाती थी। औद्योगिक क्रान्ति के प्रभाव के कारण अर्थव्यवस्था और नगरों की नई मॉगों ने दुनिया के

श्रमिक बल को जन शिक्षा के दायरे में लाने के लिए विवश किया। इस पृष्ठभूमि में जन शिक्षा ने शिक्षण विधियों की एक नई श्रृंखला लागू की जो आज भी अपनी विशेषताओं के साथ विद्यमान है।

वर्तमान में हम नई शैक्षिक क्रान्ति की दहलीज पर खड़े हैं। विद्यालयों के सन्दर्भ और उद्देश्यों में शैक्षिक सामग्री और बौद्धिक दबाव के साथ तीव्र गति से रूपान्तरण हो रहा है। यद्यपि यह बदलाव शैक्षिक समुदाय के नियन्त्रण का अतिक्रमण करते हुए दिखाई दे रहा है। फिर भी इस पर बौद्धिक दबाव के प्रभाव को अवश्य ही देखा जा सकता है। वास्तव में विश्व स्तर पर सूचना समाज के निर्माण की दिशा में शिक्षा के सम्मुख अप्रत्याशित परिवर्तन और समायोजन की चुनौती है।

जैक डेलर्स २१ वीं सदी के लिए शिक्षा की संकल्पना पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि, 'आज विश्व समाज अपने पुनर्निमाण के लिए सर्वाधिक कष्टप्रद संघर्ष से गुजर रहा है। इस प्रक्रिया में व्यक्ति और समुदाय का विकास का केन्द्र बिन्दु शिक्षा ही है।'

वर्तमान में ज्ञान के विस्तार की गति धीमी और स्थिर नहीं है। ज्ञान का सतत् तेजी से विस्तार हो रहा है। और साथ ही दिन प्रतिदिन इसका उन्नयन हो रहा है। एक ऑकलन के अनुसार, 'वर्तमान में प्रत्येक पॉच वर्ष में ज्ञान में दोगुने की वृद्धि हो जाती है।' ज्ञान के तीव्र विस्तार और बढ़ती संख्या से ज्ञान के विस्फोट की स्थिति पैदा हो गयी है। जो पारम्परिक विद्यालय के सम्पूर्ण सन्दर्भ व औचित्य के स्वरूप में बदलाव के लिए दबाव बनाए हुए हैं। वर्तमान सूचना प्रौद्योगिक और बदलते विश्व परिदृश्य की अवहेलना करके विद्यालय अपनी प्रासंगिकता बनाए नहीं रख सकते हैं। उन्हें औद्योगिक क्रान्ति की सभी विधियों और परिकल्पनाओं को अपनाने में पहले तोता रटन्त विधि से छुटकारा पाना होगा।

आज शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अध्ययन के मौखिक और लिखित शब्द शिक्षण के माध्यन नहीं रहे। इलैक्ट्रोनिक माध्यमों का सतत् विकास हो रहा है।

एम०आई०टी० मीडिया के निदेशक के अनुसार, 'ज्ञान और सूचनाओं के प्रसारण में पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों और वीडियो कैसेट्स की अपेक्षा इलैक्ट्रानिक माध्यम बहुत तेज और तात्कालिक है।

टेलीवीजन प्रति चैनल प्रति मिनट ३६०० इमेज प्रदर्शित करता है। प्रत्येक रेडियो स्टेशन से लगभग प्रतिदिन १०० शब्द और सैकड़ों तस्वीरें प्रकाशित हो सकती हैं। इसी प्रकार पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं में समान अनुपात में सूचनायें प्रकाशित होती हैं। इस प्रकार के परिवर्तनों की स्थिति में विद्यालयों और अध्यापकों के समक्ष एक समस्या उत्पन्न हो रही है कि किस प्रकार शिक्षण विधि लागू की जायं। इसका संक्षिप्त उत्तर यही है कि विद्यालयों को भी तकनीकी परिवर्तन करना पड़ेगा। इससे शैक्षिक प्रक्रिया के ढॉचे में व्यापक रूप से परिवर्तन होगा।

भूमण्डलीकरण के इस दौर में अनेकों देशों ने सूचना प्रौद्योगिकी का विद्यालय शिक्षा में विस्तार करने की योजना बनाई है और उन्हें सफलतापूर्वक क्रियान्वित कर रहा है। शिक्षा राष्ट्रीय सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में प्रवेश कर रही है। अतः हमें भी चुनौतियों का सामना करना होगा और प्रत्येक अवसर से लाभ उठाने के लिए तैयार रहना होगा।

सन्दर्भग्रन्थ-

१. अल्टेकर, ए०एस०:ऐन्सियन्ट इण्डियन एजूकेशन।
२. पाण्डेय, आर०एस०:शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार।
३. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघः शैक्षिक चेतना (चतुर्थ संस्करण)।
४. दैनिक जागरण:वैश्विक शिक्षा बाजार में भारत-२६ जनवरी-२०१५।
५. माया (२०१४),:'शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सूचना संचार तकनीकी का शिक्षण प्रभावशीलता के संदर्भ में अध्ययन"
६. नई शिक्षा, बनीपार्क, जयपुर, जनवरी २०१५.
७. मेहरा,वंदना (२००६),: 'विद्यालयी अध्यापकों का सूचना एवं संप्रेषण तकनीक के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' 'एजूट्रेक्स, नीलकमल पब्लिकेशन्स, हैदराबाद, फरवरी २००६
८. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-१९८६।